Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

ग्रामीण एवं शहरी संदर्भ में अनुसूचित जाति की सामाजिक गतिशीलता का तुलनात्मक विश्लेषण

दिनेश तायडे* डॉ. ज्योति उपाध्याय**

* शोधकर्ता, समाजकार्य एवं समाजशास्त्र अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत
** शोध निर्देशिका, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारतीय समाज में सामाजिक गतिशीलता को सामाजिक परिवर्तन और समान अवसरों की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण अवधारणा माना जाता है। अनुसूचित जाति, जो ऐतिहासिक रूप से सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक वंचना का सामना करती रही है, उनके संदर्भ में सामाजिक गतिशीलता का अध्ययन विशेष महत्व रखता है। ग्रामीण और शहरी परिवेश सामाजिक संरचना, संसाधनों की उपलब्धता, रोजगार के अवसर तथा सामाजिक संपर्कों के स्तर पर भिन्न होते हैं, जिसका सीधा प्रभाव सामाजिक उन्नयन की संभावनाओं पर पड़ता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में ग्रामीण एवं शहरी संदर्भ में अनुसूचित जाति की सामाजिक गतिशीलता का तुलनात्मक विश्लेषण पूर्ववर्ती अध्ययनों, सैद्धांतिक अवधारणाओं तथा नीतिगत विमर्श के आधार पर किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्रों में अवसरों की विविधता और संस्थागत संरचना सामाजिक उन्नयन को अपेक्षाकृत गति प्रदान करती है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक संरचनाएँ और सीमित संसाधन गतिशीलता को प्रभावित करते हैं।

प्रस्तावना – सामाजिक गतिशीलता आधुनिक समाजशास्त्रीय विमर्श की एक केंद्रीय अवधारणा है, जिसके माध्यम से किसी समाज में व्यक्तियों अथवा समूहों की सामाजिक स्थिति में होने वाले परिवर्तन को समझा जाता है। यह परिवर्तन आर्थिक, शैक्षिक, पेशागत, सांस्कृतिक अथवा राजनीतिक स्तर पर परिलक्षित हो सकता है। किसी भी लोकतांत्रिक समाज में सामाजिक गतिशीलता को समान अवसर और सामाजिक न्याय के संकेतक के रूप में देखा जाता है। यदि समाज में निम्न सामाजिक स्तर से उच्च स्तर की ओर अग्रसर होने की संभावनाएँ उपलब्ध हों, तो उसे एक गतिशील और प्रगतिशील समाज माना जाता है। भारतीय समाज के संदर्भ में यह अवधारणा विशेष महत्व रखती है, क्योंकि यहाँ सामाजिक संरचना ऐतिहासिक रूप से जाति-आधारित स्तरीकरण पर आधारित रही है।

भारतीय जाति-व्यवस्था ने लंबे समय तक सामाजिक स्थिति को जन्म-आधारित रूप से निर्धारित किया। इस संरचना में अनुसूचित जातियों को सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्तर पर हाशिए पर रखा गया। परिणामस्वरूप शिक्षा, संपत्ति, सम्मानजनक पेशों और सामाजिक प्रतिष्ठा तक उनकी पहुँच सीमित रही। स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय संविधान ने समानता, स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों को स्वीकार करते हुए अनुसूचित जातियों के उत्थान के लिए विशेष प्रावधान किए। आरक्षण नीति, शैक्षिक सहायता, आर्थिक कल्याण योजनाएँ तथा राजनीतिक प्रतिनिधित्व जैसे उपाय सामाजिक गतिशीलता को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से लागू किए गए।यद्यपि इन प्रयासों से परिवर्तन की प्रक्रिया आरंभ हुई, तथापि सामाजिक गतिशीलता का स्वरूप सभी क्षेत्रों और समुदायों में समान नहीं है। विशेष रूप से ग्रामीण और शहरी संदर्भों में सामाजिक संरचना, आर्थिक अवसरों, शिक्षा की उपलब्धता और सामाजिक संपर्कों की प्रकृति में उल्लेखनीय भिन्नता पाई जाती है। ग्रामीण समाज अपेक्षाकृत पारंपरिक, सामुदायिक और जाति-आधारित संबंधों से प्रभावित होता है, जबकि शहरी समाज औद्योगिकीकरण, आधुनिक शिक्षा और पेशागत विविधता के कारण अपेक्षाकृत अधिक लचीला और गतिशील माना जाता है।

ग्रामीण संदर्भ में सामाजिक संबंध प्राय: सामुदायिक पहचान और परंपरागत भूमिकाओं पर आधारित होते हैं। भूमि स्वामित्व, कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था और सीमित संसाधन सामाजिक स्थिति को प्रभावित करते हैं। जातिगत पहचान यहाँ सामाजिक अंत:क्रियाओं, विवाह संबंधों और आर्थिक अवसरों को गहराई से प्रभावित करती है। ऐसी परिस्थिति में अनुसूचित जाति के व्यक्तियों के लिए सामाजिक स्थिति में परिवर्तन की प्रक्रिया कई बार धीमी और जटिल हो जाती है। शिक्षा और सरकारी योजनाओं के माध्यम से परिवर्तन की संभावनाएँ अवश्य उत्पन्न हुई हैं, परंतु पारंपरिक संरचनाओं का प्रभाव अभी भी विद्यमान है। इसके विपरीत, शहरी संदर्भ में औद्योगिक और सेवा क्षेत्रों के विस्तार ने रोजगार के नए अवसर प्रदान किए हैं। यहाँ पेशागत पहचान कई बार जातिगत पहचान से अधिक महत्व ग्रहण कर लेती है। शिक्षा संस्थानों, तकनीकी प्रशिक्षण और प्रशासनिक सेवाओं में भागीदारी के माध्यम से अनुसूचित जाति के व्यक्तियों को सामाजिक उन्नयन के अवसर प्राप्त हुए हैं। शहरी जीवन शैली में सामाजिक संपर्कों का दायरा व्यापक होता है, जिससे सांस्कृतिक पूँजी और सामाजिक नेटवर्क का विस्तार संभव होता है। यह विस्तार सामाजिक गतिशीलता को गति प्रदान कर सकता है।

फिर भी यह मान लेना उचित नहीं होगा कि शहरी समाज पूर्णत: जाति-रहित या समानतापूर्ण हो चुका है। सामाजिक स्तरीकरण और पहचान की राजनीति शहरी क्षेत्रों में भी विभिन्न रूपों में विद्यमान है। किंतु तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो शहरी क्षेत्रों में संरचनात्मक अवसरों की उपलब्धता और संस्थागत समर्थन ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक दिखाई देता है। यही

कारण है कि अनुसूचित जाति की सामाजिक गतिशीलता को समझने के लिए ग्रामीण और शहरी संदर्भों का तुलनात्मक अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है। सामाजिक गतिशीलता को केवल आर्थिक आय में वृद्धि तक सीमित नहीं किया जा सकता। यह सांस्कृतिक आत्मविश्वास, सामाजिक स्वीकृति, राजनीतिक सहभागिता और जीवन-शैली में परिवर्तन से भी जुड़ी हुई है। जब कोई परिवार पारंपरिक व्यवसाय से निकलकर आधुनिक पेशों में प्रवेश करता है, जब नई पीढ़ी उच्च शिक्षा प्राप्त करती है, या जब सामाजिक सम्मान में वृद्धि होती है, तब यह परिवर्तन सामाजिक गतिशीलता का संकेत देता है। ग्रामीण और शहरी दोनों संदर्भों में इन आयामों का स्वरूप भिन्न हो सकता है।

अत: अनुसूचित जाति की सामाजिक गतिशीलता का विश्लेषण करते समय स्थानिक संदर्भ को केंद्र में रखना आवश्यक है। ग्रामीण क्षेत्रों में संरचनात्मक सीमाएँ और परंपरागत संबंध परिवर्तन की गति को प्रभावित करते हैं, जबकि शहरी क्षेत्रों में शिक्षा, औद्योगिकीकरण और पेशागत विविधता नई संभावनाएँ उत्पन्न करती हैं। इन दोनों संदर्भों का तुलनात्मक अध्ययन यह समझने में सहायता करता है कि सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया किस प्रकार कार्य कर रही है और किन क्षेत्रों में अभी भी हस्तक्षेप की आवश्यकता है। इस प्रकार, ग्रामीण एवं शहरी संदर्भ में अनुसूचित जाति की सामाजिक गतिशीलता का अध्ययन न केवल समाजशास्त्रीय दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक न्याय और समावेशी विकास की दृष्टि से भी अत्यंत प्रासंगिक है। यह विषय हमें यह समझने का अवसर प्रदान करता है कि संवैधानिक और नीतिगत प्रयासों के बावजूद सामाजिक परिवर्तन की वास्तविक दिशा और गति क्या है, तथा भविष्य में अधिक समान और न्यायपूर्ण समाज की स्थापना हेतु किन आयामों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।उपलब्ध समाजशास्त्रीय साहित्य में सामाजिक गतिशीलता को प्राय: शिक्षा, पेशा और आय के आधार पर मापा गया है। विभिन्न अध्ययनों में यह संकेत मिलता है कि शिक्षा सामाजिक उन्नयन का प्रमुख साधन है। अनुसूचित जाति के संदर्भ में शिक्षा ने पारंपरिक व्यवसायों से बाहर निकलने और वैकल्पिक पेशागत अवसरों तक पहुँचने का मार्ग प्रशस्त किया है।

ग्रामीण संदर्भ में किए गए अध्ययनों में यह उल्लेख मिलता है कि सामाजिक संरचना अभी भी जाति-आधारित संबंधों से गहराई से प्रभावित है। भूमि स्वामित्व, पारंपरिक व्यवसाय और सामाजिक प्रतिष्ठा का संबंध ऐतिहासिक रूप से निर्धारित रहा है। ऐसी परिस्थितियों में सामाजिक गतिशीलता की प्रक्रिया धीमी और सीमित हो सकती है। इसके विपरीत, शहरी संदर्भ में औद्योगिकीकरण, सेवा क्षेत्र का विस्तार और आधुनिक शिक्षा संस्थानों की उपलब्धता ने अनुसूचित जाति के व्यक्तियों के लिए नए अवसर उत्पन्न किए हैं। अनेक अध्ययनों में यह पाया गया है कि शहरी परिवेश में पेशागत परिवर्तन और आय स्तर में वृद्धि की संभावनाएँ अपेक्षाकृत अधिक होती हैं।

साहित्य यह भी दर्शाता है कि आरक्षण नीति और सरकारी सेवाओं में प्रतिनिधित्व ने शहरी मध्यवर्गीय अनुसूचित जाति समुदाय के उदय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। तथापि यह परिवर्तन समान रूप से सभी वर्गों तक नहीं पहुँचा है।

विश्लेषण – ग्रामीण एवं शहरी संदर्भ में अनुसूचित जाति की सामाजिक गतिशीलता का तुलनात्मक विश्लेषण यह संकेत देता है कि सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया एकसमान नहीं होती, बल्कि वह स्थानिक संरचनाओं, संसाधनों की उपलब्धता, सांस्कृतिक मान्यताओं और संस्थागत व्यवस्थाओं से प्रभावित होती है। सामाजिक गतिशीलता को यदि व्यापक अर्थों में समझा जाए, तो यह केवल आय या पेशे में परिवर्तन तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा, आत्मसम्मान, सांस्कृतिक पूँजी, राजनीतिक सहभागिता और जीवन-शैली में परिवर्तन से भी जुड़ी हुई है। ग्रामीण संदर्भ में सामाजिक संरचना प्राय: पारंपरिक जाति-आधारित संबंधों से संचालित होती रही है। यहाँ सामाजिक पहचान और सामुदायिक स्थिति व्यक्ति की सामाजिक स्थिति को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भूमि स्वामित्व, पारंपरिक व्यवसाय और सामाजिक नेटवर्क ग्रामीण जीवन के केंद्रीय तत्व हैं। अनुसूचित जातियों के लिए ऐतिहासिक रूप से भूमि और संसाधनों तक सीमित पहुँच ने उनकी आर्थिक स्थिति को प्रभावित किया, जिसका प्रभाव सामाजिक प्रतिष्ठा पर भी पड़ा। यद्यपि शिक्षा और सरकारी योजनाओं के प्रसार ने नई संभावनाएँ उत्पन्न की हैं, फिर भी सामाजिक स्वीकृति और परंपरागत मानसिकता कई बार परिवर्तन की गति को धीमा कर देती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक गतिशीलता प्राय: सामूहिक अनुभव से जुड़ी होती है। यदि किसी एक परिवार या व्यक्ति की आर्थिक या शैक्षिक स्थिति में सुधार होता है, तो भी व्यापक सामाजिक संरचना में परिवर्तन धीरे-धीरे ही दिखाई देता है। सामाजिक संबंधों की घनिष्ठता और पारंपरिक नियंत्रण की प्रवृत्ति नई पहचान को तुरंत स्वीकार नहीं करती। परिणामस्वरूप अनुसूचित जाति के व्यक्तियों के लिए सामाजिक स्थिति में उन्नयन प्राप्त करना एक दीर्घकालिक और जटिल प्रक्रिया बन जाता है। इसके विपरीत, शहरी संदर्भ में सामाजिक संबंध अपेक्षाकृत औपचारिक और पेशागत आधार पर निर्मित होते हैं। औद्योगिकीकरण, सेवा क्षेत्र का विस्तार और शिक्षा संस्थानों की उपलब्धता ने जाति-आधारित पारंपरिक पेशागत सीमाओं को कुछ हद तक शिथिल किया है। शहरी जीवन में व्यक्तिगत योग्यता, शैक्षिक उपलब्धि और पेशागत कौशल को अधिक महत्व प्राप्त होता है। इससे अनुसूचित जाति के व्यक्तियों के लिए पेशागत परिवर्तन और आय में वृद्धि की संभावनाएँ बढ़ती हैं, जो सामाजिक गतिशीलता के संकेतक माने जाते हैं।

शहरी क्षेत्रों में सामाजिक नेटवर्क का विस्तार भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विभिन्न समुदायों के बीच संपर्क और संवाद की व्यापकता सांस्कृतिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करती है। इससे सामाजिक पहचान के कठोर विभाजन कुछ हद तक लचीले होते हैं। शिक्षा, तकनीकी प्रशिक्षण और सरकारी सेवाओं में प्रतिनिधित्व ने एक उभरते हुए शहरी मध्यवर्गीय अनुसूचित जाति समुदाय को जन्म दिया है, जो सामाजिक गतिशीलता की दिशा में महत्वपूर्ण संकेत प्रस्तुत करता है। फिर भी यह आवश्यक है कि शहरी संदर्भ को पूर्णत: समानतामूलक न माना जाए। सामाजिक स्तरीकरण और पहचान की राजनीति यहाँ भी विभिन्न रूपों में विद्यमान है। आवासीय क्षेत्रों का वर्गीकरण, सामाजिक नेटवर्क की सीमाएँ और सांस्कृतिक भिन्नताएँ सामाजिक दूरी को बनाए रख सकती हैं। अत: शहरी संदर्भ में गतिशीलता की संभावनाएँ अधिक होने के बावजूद, वे पूर्णत: बाधा-रहित नहीं हैं।

तुलनात्मक दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक गतिशीलता की प्रक्रिया अधिक संरचनात्मक अवरोधों से घिरी होती है, जबकि शहरी क्षेत्रों में अवसरों की विविधता और संस्थागत समर्थन अपेक्षाकृत अधिक लचीलापन प्रदान करते हैं। शिक्षा दोनों ही संदर्भों में केंद्रीय कारक के रूप में उभरती है। शिक्षा न केवल आर्थिक अवसरों का

मार्ग प्रशस्त करती है, बल्कि सामाजिक चेतना, आत्मविश्वास और नई पीढ़ी की आकांक्षाओं को भी सुदृढ़ करती है। जिन परिवारों ने शिक्षा के माध्यम से पेशागत परिवर्तन प्राप्त किया है, उनमें अंतरपीढ़ी सामाजिक गतिशीलता के संकेत स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। इसके अतिरिक्त, राजनीतिक सहभागिता और प्रतिनिधित्व भी सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करते हैं। पंचायत स्तर से लेकर शहरी निकायों और उच्च प्रशासनिक सेवाओं तक प्रतिनिधित्व ने सामाजिक पहचान को नई दिशा दी है। इससे सामाजिक सम्मान और सामुदायिक आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है।

समग्र विश्लेषण यह दर्शाता है कि सामाजिक गतिशीलता की प्रक्रिया को समझने के लिए केवल आर्थिक कारकों पर ध्यान केंद्रित करना पर्याप्त नहीं है। सांस्कृतिक पूँजी, सामाजिक नेटवर्क, संस्थागत संरचना और सामाजिक स्वीकृति जैसे आयाम भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। ग्रामीण और शहरी संदर्भों के तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि स्थानिक परिवेश सामाजिक परिवर्तन की दिशा और गति को निर्णायक रूप से प्रभावित करता है। अत: अनुसूचित जाति की सामाजिक गतिशीलता को समझने के लिए बहुआयामी और संदर्भ-विशेष दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। यह न केवल समाजशास्त्रीय विश्लेषण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि नीतिगत हस्तक्षेप की दिशा निर्धारित करने के लिए भी उपयोगी है। ग्रामीण क्षेत्रों में संरचनात्मक अवरोधों को कम करने और शहरी क्षेत्रों में समावेशी वातावरण को सुदृढ़ करने के प्रयास सामाजिक न्याय की दिशा में सार्थक योगदान दे सकते हैं।

निष्कर्ष – उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति की सामाजिक गतिशीलता एक जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया है, जो स्थानिक संदर्भों से गहराई से प्रभावित होती है। ग्रामीण और शहरी परिवेश सामाजिक संरचना, संसाधनों की उपलब्धता, शैक्षिक अवसरों और सामाजिक संबंधों के स्तर पर भिन्न हैं, जिसके कारण सामाजिक परिवर्तन की दिशा और गति में अंतर दिखाई देता है। ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक सामाजिक संरचनाएँ, सीमित आर्थिक अवसर और जाति-आधारित संबंध सामाजिक गतिशीलता की प्रक्रिया को अपेक्षाकृत धीमा बनाते हैं। यद्यपि शिक्षा और नीतिगत हस्तक्षेपों ने परिवर्तन के संकेत अवश्य दिए हैं, फिर भी सामाजिक स्वीकृति और संरचनात्मक अवरोध महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके विपरीत, शहरी क्षेत्रों में औद्योगिकीकरण, पेशागत विविधता और शैक्षिक संस्थानों की उपलब्धता सामाजिक उन्नयन के लिए अपेक्षाकृत अधिक अनुकूल वातावरण प्रदान करती है। तथापि यह भी स्वीकार करना आवश्यक है कि शहरी संदर्भ पूर्णत: बाधा-रहित नहीं है। सामाजिक स्तरीकरण और पहचान के विभिन्न आयाम यहाँ भी विद्यमान हैं। अत: सामाजिक गतिशीलता को केवल आर्थिक उन्नति तक सीमित नहीं समझा जा सकताय यह सामाजिक सम्मान, सांस्कृतिक पूँजी और राजनीतिक सहभागिता से भी जुड़ी हुई है।

समग्र रूप से कहा जा सकता है कि अनुसूचित जाति की सामाजिक गतिशीलता को समझने के लिए ग्रामीण और शहरी दोनों संदर्भों का तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है। यही दृष्टिकोण सामाजिक न्याय और समावेशी विकास की दिशा में प्रभावी नीतिगत निर्णयों के लिए आधार प्रदान कर सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. बेतेइ, आंद्रे. (1992). भारतीय समाज: संरचना और परिवर्तन. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. श्रीनिवास, एम. एन. (1994). आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
3. सिंह, योगेन्द्र. (2004). भारतीय परंपरा का आधुनिकीकरण. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन्स।
4. झा, घनश्याम शाह. (2003). दलित पहचान और राजनीति. नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स (हिंदी संस्करण)।
5. जोधका, सुरिंदर एस. (2015). भारत में जाति. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान (हिंदी संस्करण)।

****